# यूको इंद्रप्रस्थ

**नई दिल्ली अंचल - छमाही पत्रिका**

**अंक - 7**

**अक्तूबर 2025 - मार्च 2026**

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

## संपादक मंडल

**संरक्षक**

श्री गौतम पात्र

मुख्य महाप्रबंधक , कारोबार विकास

**अध्यक्ष**

श्री राजेश कुमार तिवारी

महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

**मार्गदर्शन**

श्री मनोज कुमार

सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

**संपादक**

नम्रता सिंह

वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा



पता : 5, यूको बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली -1

ई-मेल: zonewdelhi.ol@ucobank.co.in

# महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियों,

नई दिल्ली अंचल की अर्द्धवार्षिक पत्रिका "यूको इंद्रप्रस्थ" के माध्यम से एक बार पुनः आप सभी से संवाद स्थापित करने का अवसर प्राप्त होने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल हमारी उपलब्धियों का संकलन नहीं, बल्कि अंचल के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की प्रतिबद्धता, सामूहिक प्रयासों और उत्कृष्ट कार्य-संस्कृति का प्रतिबिंब है।

यह समय अब तक की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के साथ-साथ आगामी लक्ष्यों के प्रति अपनी रणनीति को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने का है। हमें विश्वास है कि स्पष्ट लक्ष्य, समुचित योजना, अनुशासित कार्यशैली तथा टीम भावना के साथ किए गए समवेत प्रयास निश्चित रूप से हमें सफलता के नए आयामों तक पहुँचाएंगे। वर्तमान वित्तीय वर्ष में व्यवसाय विस्तार, गुणवत्तापूर्ण परिचालन, जोखिम प्रबंधन तथा उत्कृष्ट ग्राहक सेवा को हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाना होगा।

साथियों, किसी भी बैंक की सबसे बड़ी पहचान उसकी ग्राहक सेवा होती है। हमारा प्रत्येक व्यवहार, प्रत्येक संवाद और प्रत्येक सेवा ग्राहक के मन में बैंक के प्रति विश्वास एवं आत्मीयता का भाव उत्पन्न करती है। अतः हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक ग्राहक को त्वरित, पारदर्शी एवं संतोषजनक सेवा प्राप्त हो। साथ ही, कासा, रिटेल, एमएसएमई, कृषि ऋण, डिजिटल बैंकिंग उत्पाद, साउंड बॉक्स, क्यूआर कोड, यूपीआई, डोरस्टेप बैंकिंग तथा अन्य बैंकिंग सेवाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं उपयोग पर विशेष

बल देना होगा। प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी व्यक्तिगत स्तर पर ग्राहकों से संवाद स्थापित कर इन उत्पादों के प्रति जागरूकता बढ़ाए तथा नए व्यवसाय सृजन में सक्रिय भूमिका निभाए।

व्यवसाय वृद्धि के साथ-साथ ऋण गुणवत्ता एवं प्रभावी ऋण निगरानी पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। समयबद्ध अनुवीक्षण, सतत निगरानी तथा संभावित जोखिमों की समय रहते पहचान करके हम नवीन स्लिपेज को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं। प्रत्येक शाखा को अपने एनपीए खातों की नियमित समीक्षा करते हुए वसूली की उपयुक्त रणनीति तैयार करनी चाहिए तथा उपलब्ध सभी वैधानिक एवं प्रशासनिक विकल्पों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण ऋण पोर्टफोलियो ही बैंक की दीर्घकालीन प्रगति का सशक्त आधार है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि नई दिल्ली अंचल का प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी कार्यनिष्ठा, समर्पण, सकारात्मक सोच एवं टीम भावना के साथ कार्य करते हुए न केवल निर्धारित व्यवसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति करेगा, बल्कि उत्कृष्ट प्रदर्शन के नए कीर्तिमान भी स्थापित करेगा। आइए, हम सभी मिलकर आगामी वित्तीय वर्ष नवाचार, गुणवत्ता, ग्राहक संतुष्टि एवं उत्कृष्ट निष्पादन को अपनी कार्यशैली का अभिन्न अंग बनाते हुए अंचल को सफलता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का संकल्प लें।

आप सभी के सतत सहयोग, समर्पण एवं अथक परिश्रम के लिए मैं हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि "यूको इंद्रप्रस्थ" का यह अंक आपको प्रेरणा, ज्ञान एवं नवीन ऊर्जा प्रदान करेगा।

शुभकामनाओं के साथ |

आपका,

(राजेश कुमार तिवारी)
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

# संपादक की कलम से...

नई दिल्ली अंचल की अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'यूको इंद्रप्रस्थ' के *अक्टूबर–मार्च* 2026 अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत है।

'यूको इंद्रप्रस्थ' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे अंचल की सामूहिक सोच, रचनात्मकता, ज्ञान-साझाकरण एवं व्यवसायिक उपलब्धियों का सशक्त मंच है। इसका उद्देश्य बैंक की विभिन्न व्यावसायिक, प्रशासनिक एवं राजभाषा संबंधी गतिविधियों को एक सूत्र में पिरोते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक पहुँचाना तथा उनमें नवाचार, उत्कृष्ट कार्य-संस्कृति एवं सकारात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना है।

हमारा विश्वास है कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि संगठन की कार्यसंस्कृति, समन्वय और प्रगति का आधार भी है। हिन्दी ने सदैव बैंकिंग सेवाओं को जनसामान्य से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्राहक सेवा को अधिक सहज, प्रभावी एवं आत्मीय बनाने में राजभाषा का योगदान निरंतर बढ़ रहा है और हमें विश्वास है कि भविष्य में भी यह यात्रा नई ऊँचाइयों को स्पर्श करेगी।

निरंतर सीखना, समय के साथ स्वयं को परिष्कृत करना तथा उत्कृष्टता की ओर अग्रसर रहना ही सफलता का मूल मंत्र है। प्रत्येक उपलब्धि हमें नए लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा देती है और प्रत्येक चुनौती हमें अधिक सशक्त बनाती है। सामूहिक प्रयास, समर्पण एवं सकारात्मक सोच के साथ हम न केवल अपने व्यवसायिक उद्देश्यों की प्राप्ति करेंगे, बल्कि राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन में भी नए मानक स्थापित करेंगे।

आपके बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए सदैव प्रेरणास्रोत हैं। हमें विश्वास है कि यह अंक आपको ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं प्रेरणादायी लगेगा तथा आप भविष्य में भी इसी उत्साह के साथ अपना सहयोग एवं स्नेह प्रदान करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

आपकी

नम्रता सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

# आलेख - भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में प्रौद्योगिकी-संचालित परिवर्तन की भावी संकल्पनाएं

### प्रस्तावना

कभी बैंकिंग का अर्थ शाखा के बाहर लंबी कतारों में खड़ा होना, पासबुक की छपाई कराना, पर्ची भरना और सीमित समय में ही कार्य संपन्न करना होता था। बैंक आम नागरिक के लिए एक औपचारिक, जटिल और समयसाध्य संस्था हुआ करता था। किंतु आज वही बैंकिंग जेब में रखे मोबाइल फोन के माध्यम से कुछ ही सेकंड में संभव हो गई है। पैसे भेजना, बिल भुगतान, निवेश, बीमा या ऋण के लिए आवेदन अब उंगलियों के स्पर्श मात्र से किया जा सकता है। यह परिवर्तन केवल सुविधा का विस्तार नहीं है, बल्कि यह भारत की आर्थिक संस्कृति और वित्तीय व्यवहार में आया एक ऐतिहासिक बदलाव है।

### वर्तमान समय में भारतीय बैंकिंग

वर्तमान समय में भारतीय बैंकिंग व्यवस्था एक ऐसे युग में प्रवेश कर चुकी है जहाँ प्रौद्योगिकी बैंकिंग का मूल आधार बन चुकी है और डिजिटल भुगतान इसका सबसे सशक्त उदाहरण है। जहाँ वित्त वर्ष 2017–18 में डिजिटल भुगतान लेन-देन लगभग 2,071 करोड़ थे, वहीं इसके अगले वर्षों में लगातार अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है। खासकर FY24 में भारत में कुल डिजिटल भुगतान लेन-देन लगभग 208.5 अरब (20850 करोड़) तक पहुँच गए, जिसमें UPI का हिस्सा लगभग 83 प्रतिशत से भी ऊपर रहा, जो यह दर्शाता है कि अधिकतर लेन-देन इसी माध्यम से हो रहे हैं।

आगे वित्तीय वर्ष 25 में भी डिजिटल भुगतान का विस्फोटक विकास जारी रहा, जिसमें पूरे वर्ष में उम्मीदवारों के अनुसार कुल डिजिटल लेन-देन लगभग 221.9 अरब (22190 करोड़) तक पहुँच गए और Unified Payments Interface (UPI) के माध्यम से 185.8 अरब (18580 करोड़) से अधिक लेन-देन दर्ज किए गए, जो पिछले वर्ष की तुलना में 41% की वृद्धि को दर्शाता है।

इस वृद्धि का अर्थ यह है कि डिजिटल भुगतान अब लगभग सभी गैर-नकद रिटेल लेन-देन का 99.9% हिस्सा संभाल रहे हैं, जो स्पष्ट रूप से नकद-आधारित प्रणाली से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर सामाजिक और आर्थिक रूप से तीव्र संक्रमण को दर्शाता है।

इस प्रकार भारत में डिजिटल भुगतान के आंकड़े न केवल लगातार बढ़ रहे हैं, बल्कि उन्होंने बैंकिंग और वित्तीय व्यवहार का स्वरूप ही बदल दिया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रौद्योगिकी अब बैंकिंग की सहायक नहीं, बल्कि उसका मूल आधार बन चुकी है।

इस परिवर्तन ने बैंकिंग को शहरों की सीमाओं से निकालकर गाँवों तक, संपन्न वर्ग से लेकर गरीब तबके तक और शाखाओं से घरों तक पहुँचा दिया है। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि भविष्य में बैंकिंग किस दिशा में जाएगी, प्रौद्योगिकी भारतीय बैंकिंग को किस रूप में ढालेगी और इसके समक्ष कौन-सी नई चुनौतियाँ खड़ी होंगी। इन्हीं प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करना इस निबंध का उद्देश्य है।

## 1. शाखा-केंद्रित बैंकिंग से नागरिक-केंद्रित बैंकिंग

भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था का सबसे बड़ा और निर्णायक परिवर्तन "शाखा-प्रधान बैंकिंग" से निकलकर "नागरिक-प्रधान बैंकिंग" की ओर अग्रसर होना है। पारंपरिक बैंकिंग मॉडल में जहाँ ग्राहक को अपनी आवश्यकता के लिए बार-बार बैंक शाखा जाना पड़ता था, वहीं आधुनिक डिजिटल युग में बैंकिंग सेवाएँ स्वयं ग्राहक के जीवन-परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप उसके पास पहुँच रही हैं। मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, डिजिटल भुगतान प्लेटफॉर्म और डेटा-आधारित सेवाओं के माध्यम से बैंक अब केवल लेन-देन करने वाले संस्थान नहीं, बल्कि व्यक्ति-केंद्रित वित्तीय समाधान प्रदाता बनते जा रहे हैं। इस बदलाव ने बैंकिंग को अधिक सुलभ, सरल, तेज़ और समावेशी बनाया है।

### (क) शाखाओं की बदलती भूमिका

भविष्य की बैंकिंग में बैंक शाखाएँ समाप्त नहीं होंगी, बल्कि उनकी भूमिका और स्वरूप में गुणात्मक परिवर्तन आएगा। पारंपरिक नकद जमा-निकासी या साधारण लेन-देन की गतिविधियाँ धीरे-धीरे डिजिटल माध्यमों पर स्थानांतरित हो जाएँगी, जबकि शाखाएँ परामर्श, मार्गदर्शन और समाधान केंद्र के रूप में विकसित होंगी। गृह ऋण, शिक्षा ऋण, वाहन ऋण, बीमा योजनाएँ, निवेश परामर्श, पेंशन योजनाएँ तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए वित्तीय सहायता जैसे जटिल और दीर्घकालिक निर्णयों में शाखाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। इसके अतिरिक्त, ग्राहक शिकायत निवारण, विवाद समाधान, वित्तीय साक्षरता तथा व्यक्तिगत परामर्श जैसी सेवाओं के माध्यम से शाखाएँ ग्राहक-विश्वास और संबंध निर्माण का केंद्र बनी रहेंगी।

### (ख) सेवा केंद्र और प्रतिनिधियों का विस्तार

नागरिक-केंद्रित बैंकिंग को सशक्त बनाने में बैंक सेवा केंद्रों और प्रतिनिधियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी, विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में। बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट (बैंक मित्र), सूक्ष्म एटीएम, मोबाइल बैंकिंग वैन और आधार-आधारित भुगतान प्रणालियों के माध्यम से बैंकिंग सेवाएँ अंतिम छोर तक पहुँच रही हैं। "बैंक मित्र" मॉडल ने गाँवों में नकद जमा-निकासी, पेंशन और सब्सिडी की प्राप्ति, बीमा प्रीमियम भुगतान तथा डिजिटल लेन-देन को सरल बनाया है। यह व्यवस्था न केवल भौगोलिक दूरी को कम करती है, बल्कि वित्तीय समावेशन को भी सशक्त बनाती है। इस प्रकार "घर के पास बैंकिंग" की अवधारणा भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था की आधारशिला बनती जा रही है, जहाँ प्रत्येक नागरिक को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार समयबद्ध और सुलभ बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध हो सकें।

### 2. डिजिटल भुगतान क्रांति: नकदी पर निर्भरता में कमी

डिजिटल भुगतान भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में आए परिवर्तन का सबसे स्पष्ट, तीव्र और प्रभावशाली संकेत है। एक समय था जब दैनिक जीवन के लगभग सभी आर्थिक लेन-देन नकदी पर आधारित थे, किंतु आज स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। छोटी-सी किराना दुकान से लेकर बड़े शॉपिंग मॉल, विद्यालय की फीस से लेकर अस्पतालों के भुगतान, बिजली-पानी के बिल से लेकर कर भुगतान तक—डिजिटल भुगतान जीवन के हर क्षेत्र में सर्वव्यापी हो चुका है। UPI, मोबाइल वॉलेट, इंटरनेट बैंकिंग, क्यूआर कोड और कार्ड आधारित भुगतान प्रणालियों ने लेन-देन को न केवल सरल बनाया है, बल्कि उसे अधिक सुरक्षित और त्वरित भी किया है।

इस डिजिटल भुगतान क्रांति का सबसे बड़ा प्रभाव नकदी पर निर्भरता में निरंतर कमी के रूप में सामने आया है। नकद लेन-देन जहाँ असुविधा, जोखिम और अपारदर्शिता से जुड़ा होता था, वहीं डिजिटल भुगतान ने पारदर्शिता, लेन-देन का रिकॉर्ड और जवाबदेही सुनिश्चित की है। इससे कर अनुपालन में सुधार हुआ है, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा है और औपचारिक अर्थव्यवस्था का दायरा विस्तृत हुआ है। आम नागरिक के लिए भी यह व्यवस्था समय की बचत, लागत में कमी और वित्तीय अनुशासन का सशक्त माध्यम बन गई है।

भविष्य में डिजिटल भुगतान और अधिक उन्नत एवं सर्वसुलभ रूप ग्रहण करेगा। स्वर-आधारित भुगतान, कम या अस्थिर नेटवर्क वाले क्षेत्रों में ऑफलाइन डिजिटल भुगतान, स्वचालित एवं आवर्ती भुगतान प्रणालियाँ तथा सीमा-पार डिजिटल भुगतान जैसी अवधारणाएँ बैंकिंग को वैश्विक स्तर पर नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सुरक्षित पहचान प्रणालियों के साथ मिलकर डिजिटल भुगतान न केवल सुविधा का साधन रहेगा, बल्कि एक पारदर्शी, समावेशी और अनुशासित आर्थिक व्यवस्था की आधारशिला भी बनेगा। इस प्रकार डिजिटल भुगतान अब मात्र एक तकनीकी विकल्प नहीं, बल्कि भारतीय बैंकिंग और अर्थव्यवस्था के भविष्य का अनिवार्य स्तंभ बन चुका है।

### 3. वित्तीय समावेशन: जन-धन योजना और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण

प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग ने बैंकिंग को केवल शहरी और संपन्न वर्ग तक सीमित न रखकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में निर्णायक भूमिका निभाई है। इस दिशा में प्रधानमंत्री जन-धन योजना (PMJDY) भारतीय बैंकिंग इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी पहल के रूप में उभरी है। अगस्त 2025 तक 56.16 करोड़ से अधिक जन-धन खाते तथा इनमें लगभग 2.67 लाख करोड़ रुपये की जमा राशि इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि बैंकिंग अब समाज के उन वर्गों तक भी पहुँच चुकी है, जो दशकों तक औपचारिक वित्तीय प्रणाली से बाहर रहे थे।

जन-धन योजना ने केवल खाते खोलने तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) से जोड़कर कल्याणकारी योजनाओं की प्रभावशीलता को कई गुना बढ़ा दिया। आज सब्सिडी, पेंशन, छात्रवृत्ति, मनरेगा मजदूरी, किसान सम्मान निधि जैसी अनेक सरकारी योजनाओं की राशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुँच रही है। इससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हुई है, लीकेज पर रोक लगी है और शासन व्यवस्था में पारदर्शिता एवं जवाबदेही को मजबूती मिली है।

इस योजना की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता महिलाओं की व्यापक भागीदारी है। जन-धन खातों में लगभग 56 प्रतिशत खाताधारक महिलाएं हैं, जो यह दर्शाता है कि बैंकिंग अब महिला सशक्तिकरण का भी प्रभावी माध्यम बन

रही है। बैंक खाते के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक पहचान, बचत की आदत और वित्तीय निर्णयों में भागीदारी का अवसर मिला है, जिससे सामाजिक ढाँचे में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

भविष्य की दृष्टि से वित्तीय समावेशन को और गहरा करने के लिए सरल और स्थानीय भाषा में बैंकिंग सेवाएँ, व्यापक वित्तीय साक्षरता अभियान, तथा ग्रामीण डिजिटल अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण अत्यंत आवश्यक होगा। मोबाइल बैंकिंग, आधार आधारित सेवाएँ, बैंक मित्र मॉडल और डिजिटल भुगतान के विस्तार के साथ यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि प्रत्येक नागरिक न केवल बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ा हो, बल्कि उसका सक्रिय और जागरूक उपयोगकर्ता भी बने। इस प्रकार वित्तीय समावेशन भारतीय बैंकिंग को सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और समावेशी विकास की दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

## 4. कृत्रिम बुद्धि आधारित बैंकिंग

कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था को अधिक बुद्धिमान, सक्रिय और पूर्वानुमान-आधारित बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाएगी। पारंपरिक बैंकिंग जहाँ प्रतिक्रियात्मक (reactive) थी, वहीं AI के माध्यम से बैंक अब ग्राहकों की आवश्यकताओं को पहले ही समझने और उनके अनुरूप समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हो रहे हैं। चैटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट और स्वचालित सेवा प्रणालियों के माध्यम से ग्राहकों को 24×7 त्वरित सहायता उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे न केवल सेवा गुणवत्ता में सुधार हुआ है, बल्कि शाखाओं पर निर्भरता भी कम हुई है।

ऋण वितरण के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धि क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है। AI आधारित क्रेडिट स्कोरिंग और डेटा विश्लेषण प्रणालियाँ ग्राहक की आय, लेन-देन व्यवहार और वित्तीय इतिहास का समग्र मूल्यांकन कर तेज़, निष्पक्ष और अधिक सटीक ऋण निर्णय लेने में सहायता करती हैं। इससे ऋण स्वीकृति की प्रक्रिया सरल होती है और समय की बचत के साथ-साथ जोखिम भी कम होता है। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों तथा पहली बार ऋण लेने वाले ग्राहकों के लिए यह तकनीक नए अवसर खोल रही है।

धोखाधड़ी की पहचान और रोकथाम में भी AI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती जा रही है। वास्तविक समय में लेन-देन का विश्लेषण कर संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत पहचान करना, साइबर अपराधों को रोकना और ग्राहक की वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करना अब अधिक प्रभावी हो गया है। इसके साथ ही AI आधारित जोखिम प्रबंधन प्रणालियाँ संभावित संकटों का पूर्वानुमान लगाकर बैंकों को समय रहते सुधारात्मक कदम उठाने में सक्षम बनाती हैं।

भविष्य में AI आधारित बैंकिंग केवल स्वचालन तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह व्यक्तिगत बैंकिंग अनुभव को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी। ग्राहक व्यवहार और प्राथमिकताओं के विश्लेषण के आधार पर अनुकूलित उत्पाद, निवेश सुझाव और बचत योजनाएँ प्रदान की जाएँगी। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धि बैंकिंग को अधिक सुरक्षित, कुशल और ग्राहक-केंद्रित बनाकर भारतीय वित्तीय प्रणाली की मजबूती में निर्णायक योगदान देगी।

### 5. साइबर सुरक्षा: सबसे बड़ी चुनौती

डिजिटल बैंकिंग के तीव्र विस्तार के साथ-साथ साइबर सुरक्षा भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था की सबसे बड़ी और जटिल चुनौती के रूप में उभर कर सामने आई है। जैसे-जैसे बैंकिंग सेवाएँ मोबाइल, इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित हो रही हैं, वैसे-वैसे जाली संदेश (फिशिंग), फर्जी कॉल, नकली वेबसाइट, पहचान की चोरी और डेटा उल्लंघन जैसे साइबर जोखिम भी तेजी से बढ़ रहे हैं। ये खतरे न केवल ग्राहकों की वित्तीय सुरक्षा को प्रभावित करते हैं, बल्कि बैंकिंग प्रणाली में विश्वास को भी कमजोर कर सकते हैं।

भविष्य की बैंकिंग में साइबर सुरक्षा को केवल एक तकनीकी आवश्यकता के रूप में नहीं, बल्कि सामरिक प्राथमिकता के रूप में अपनाना अनिवार्य होगा। इसके लिए बहु-स्तरीय प्रमाणीकरण, जैसे दो-स्तरीय या बहु-कारक सत्यापन (Multi-Factor Authentication), बायोमेट्रिक पहचान, एन्क्रिप्शन तकनीक और सुरक्षित नेटवर्क संरचना को व्यापक रूप से लागू करना होगा। साथ ही, लेन-देन की निरंतर एवं वास्तविक समय में निगरानी के माध्यम से संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत पहचान और रोकथाम सुनिश्चित करनी होगी।

साइबर सुरक्षा में तकनीकी उपायों के साथ-साथ मानव जागरूकता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। अनेक साइबर अपराध तकनीकी कमजोरी से अधिक मानवीय लापरवाही का लाभ उठाते हैं। इसलिए ग्राहकों और बैंक कर्मचारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण, जागरूकता अभियान और सरल भाषा में सुरक्षा संबंधी जानकारी प्रदान करना आवश्यक होगा। सुरक्षित पासवर्ड, अनजान लिंक से बचाव और संदिग्ध कॉल की पहचान जैसे छोटे-छोटे कदम बड़े जोखिमों को टालने में सहायक बन सकते हैं।

इस प्रकार, डिजिटल बैंकिंग के भविष्य को सुरक्षित और विश्वसनीय बनाए रखने के लिए साइबर सुरक्षा को बैंकिंग का अभिन्न और सतत अंग बनाना अनिवार्य है। मजबूत तकनीकी ढाँचा, सतर्क निगरानी व्यवस्था और जागरूक नागरिक—इन तीनों के समन्वय से ही डिजिटल बैंकिंग का सुरक्षित और स्थायी विकास संभव हो सकेगा।

### केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्रा

केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्रा (Central Bank Digital Currency – CBDC) भारतीय मौद्रिक प्रणाली में एक नए युग की शुरुआत कर सकती है। यह मुद्रा पारंपरिक नकदी का डिजिटल स्वरूप होगी, जिसे सीधे केंद्रीय बैंक द्‌वारा जारी और नियंत्रित किया जाएगा। डिजिटल मुद्रा के माध्यम से मुद्रा प्रबंधन अधिक पारदर्शी, सुरक्षित और कुशल बन सकेगा। विशेष रूप से नकली मुद्रा पर प्रभावी नियंत्रण, नकदी की छपाई, परिवहन और भंडारण से जुड़ी लागत में उल्लेखनीय कमी तथा मुद्रा की वास्तविक समय में निगरानी जैसे लाभ सामने आएँगे।

सरकारी भुगतान प्रणाली में केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्रा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। सब्सिडी, पेंशन, वेतन और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का भुगतान सीधे और तत्काल लाभार्थियों तक पहुँचाया जा सकेगा, जिससे देरी, लीकेज और बिचौलियों की भूमिका समाप्त होगी। इससे प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) व्यवस्था और अधिक पारदर्शी, तेज़ और विश्वसनीय बनेगी। साथ ही, डिजिटल मुद्रा के माध्यम से लेन-देन का स्पष्ट रिकॉर्ड उपलब्ध होने से वित्तीय अनुशासन और कर अनुपालन को भी बढ़ावा मिलेगा।

भविष्य की डिजिटल अर्थव्यवस्था के संदर्भ में केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्रा डिजिटल भुगतान प्रणालियों, स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स और सीमा-पार लेन-देन को नया आयाम दे सकती है। यह न केवल डिजिटल लेन-देन को अधिक सुरक्षित बनाएगी, बल्कि मौद्रिक नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में भी केंद्रीय बैंक की क्षमता को सुदृढ़ करेगी। उचित तकनीकी ढाँचे, साइबर सुरक्षा और जन-जागरूकता के साथ लागू की गई डिजिटल मुद्रा भारत को एक आधुनिक, पारदर्शी और सशक्त डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर करने में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

### 7. लेखा प्रणाली: सुरक्षित डिजिटल अभिलेखों की नई भूमिका

भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था में सुरक्षित और विश्वसनीय डिजिटल अभिलेख प्रणाली की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होने जा रही है। जैसे-जैसे बैंकिंग प्रक्रियाएँ पूर्णतः डिजिटल होती जा रही हैं, वैसे-वैसे ऋण स्वीकृति, दस्तावेज़ प्रबंधन, व्यापार वित्त और ग्राहक पहचान सत्यापन से जुड़े रिकॉर्ड का डिजिटल रूप में सुरक्षित संधारण अनिवार्य बनता जा रहा है। आधुनिक लेखा प्रणालियाँ न केवल कागजी अभिलेखों पर निर्भरता कम करेंगी, बल्कि बैंकिंग कार्यों को अधिक पारदर्शी, त्वरित और त्रुटि-रहित भी बनाएँगी।

डिजिटल अभिलेखों के माध्यम से ऋण खातों, गारंटी, प्रतिभूतियों और भुगतान इतिहास का वास्तविक समय में सत्यापन संभव होगा। इससे निर्णय-प्रक्रिया में तेजी आएगी और धोखाधड़ी की संभावनाएँ कम होंगी। व्यापार वित्त के क्षेत्र में भी डिजिटल दस्तावेज़, ई-इनवॉइस और इलेक्ट्रॉनिक लेटर ऑफ क्रेडिट जैसी व्यवस्थाएँ अंतरराष्ट्रीय और घरेलू व्यापार को अधिक सुरक्षित और सुगम बनाएँगी। पहचान सत्यापन में डिजिटल केवाईसी और सुरक्षित डेटा भंडारण प्रणालियाँ ग्राहक अनुभव को सरल बनाते हुए गोपनीयता और सुरक्षा को सुनिश्चित करेंगी।

भविष्य की लेखा प्रणाली केवल रिकॉर्ड रखने तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह विश्वास की नई संरचना का आधार बनेगी। सुदृढ़ साइबर सुरक्षा, एन्क्रिप्शन और नियंत्रित पहुँच के माध्यम से डिजिटल अभिलेख न केवल नियामकीय अनुपालन को मजबूत करेंगे, बल्कि बैंकों, ग्राहकों और अन्य हितधारकों के बीच विश्वास को भी बढ़ाएँगे। इस प्रकार सुरक्षित डिजिटल लेखा प्रणाली भविष्य की बैंकिंग को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और भरोसेमंद बनाकर एक सशक्त वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करेगी।

### 8. फिनटेक संस्थाओं के साथ सहयोग

भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था में बैंक और फिनटेक संस्थाओं के बीच सहयोग एक निर्णायक भूमिका निभाएगा। पारंपरिक बैंक जहाँ मजबूत पूँजी आधार, नियामकीय अनुभव और व्यापक ग्राहक विश्वास रखते हैं, वहीं फिनटेक संस्थाएँ तकनीकी नवाचार, गति और ग्राहक-केंद्रित समाधान प्रस्तुत करती हैं। इन दोनों की संयुक्त शक्ति से बैंकिंग सेवाएँ अधिक सरल, तेज़ और सुलभ बन सकेंगी, विशेषकर उन वर्गों के लिए जो अब तक औपचारिक वित्तीय सेवाओं से आंशिक रूप से ही जुड़े रहे हैं।

इस सहयोग के माध्यम से छोटे और त्वरित ऋण, वेतन आधारित वित्तीय सेवाएँ, सूक्ष्म एवं सरल बीमा उत्पाद तथा उद्यम और स्टार्टअप वित्त को नई गति मिलेगी। डेटा एनालिटिक्स, वैकल्पिक क्रेडिट स्कोरिंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग से ऋण स्वीकृति की प्रक्रिया अधिक तेज़ और समावेशी बनेगी। इससे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों, स्वरोज़गार करने वालों और असंगठित क्षेत्र के कामगारों को समय पर वित्तीय सहायता उपलब्ध हो सकेगी।

बैंक–फिनटेक सहयोग न केवल सेवाओं की पहुँच बढ़ाएगा, बल्कि नवाचार और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी प्रोत्साहित करेगा। इससे ग्राहक को बेहतर अनुभव, कम लागत और अधिक विकल्प प्राप्त होंगे। नियामकीय ढाँचे के भीतर पारदर्शी और सुरक्षित सहयोग के माध्यम से यह साझेदारी भारतीय बैंकिंग प्रणाली को अधिक लचीला, आधुनिक और भविष्य के लिए तैयार बनाएगी। इस प्रकार फिनटेक संस्थाओं के साथ सहयोग भारत की बैंकिंग व्यवस्था को एक गतिशील और नवाचार-प्रेरित पारिस्थितिकी तंत्र की ओर ले जाने वाला महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

### 9. व्यक्तिगत बैंकिंग: हर नागरिक के लिए अलग समाधान

भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था "एक ही उत्पाद सभी के लिए" की पारंपरिक सोच से आगे बढ़कर व्यक्तिगत और आवश्यकता-आधारित बैंकिंग की दिशा में अग्रसर होगी। बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवेश में यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रत्येक नागरिक की आय, जीवन-शैली, जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्य अलग-अलग होते हैं। इसलिए बैंकिंग सेवाओं का स्वरूप भी इन्हीं भिन्नताओं के अनुरूप ढलना आवश्यक है। डिजिटल तकनीक, डेटा विश्लेषण और कृत्रिम बुद्धि के माध्यम से बैंक अब प्रत्येक ग्राहक को उसकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार समाधान प्रदान करने में सक्षम हो रहे हैं।

नौकरीपेशा वर्ग के लिए वेतन-आधारित ऋण, स्वचालित बचत और निवेश योजनाएँ, क्रेडिट कार्ड तथा डिजिटल भुगतान सुविधाएँ विकसित की जाएँगी। किसानों के लिए फसल चक्र के अनुरूप ऋण, बीमा, सब्सिडी से जुड़ी सेवाएँ और मौसम आधारित वित्तीय समाधान उपलब्ध कराए जाएँगे। विद्यार्थियों के लिए शिक्षा ऋण, कौशल विकास वित्त और डिजिटल बैंकिंग के सरल उत्पाद तैयार होंगे, जबकि वरिष्ठ नागरिकों के लिए सुरक्षित निवेश, नियमित आय योजनाएँ, स्वास्थ्य बीमा और आसान ग्राहक सेवा को प्राथमिकता दी जाएगी।

### निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रौद्योगिकी-संचालित परिवर्तन ने भारतीय बैंकिंग को शाखाओं की सीमाओं से निकालकर हर नागरिक की पहुँच में ला दिया है। डिजिटल भुगतान, जन-धन योजना और AI आधारित सेवाएँ यह सिद्ध करती हैं कि बैंकिंग अब समावेशन, पारदर्शिता और गति की दिशा में निर्णायक रूप से आगे बढ़ रही है। यद्यपि साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियाँ बनी रहेंगी, फिर भी यदि तकनीकी नवाचार के साथ सुरक्षा, नियमन और जन-जागरूकता का संतुलन साध लिया गया, तो भारतीय बैंकिंग व्यवस्था "विकसित भारत" के लक्ष्य की सबसे मजबूत आर्थिक आधारशिला सिद्ध होगी।

**साधना मिश्रा**
**प्रबंधक**
**यूको बैंक, अंचल कार्यालय,**
**नई दिल्ली**

# सुप्रीम कोर्ट शाखा - नवीन परिसर उद्घाटन

**दिनांक 10.02.2026 को हमारी सुप्रीम कोर्ट शाखा के नवीन परिसर शाखा का उद्घाटन आदरणीय श्री सूर्यकांत, चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया के कर कमलों द्वारा किया गया यह सभी के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण रहा।**

# साहित्यकार - मुंशी प्रेमचंद

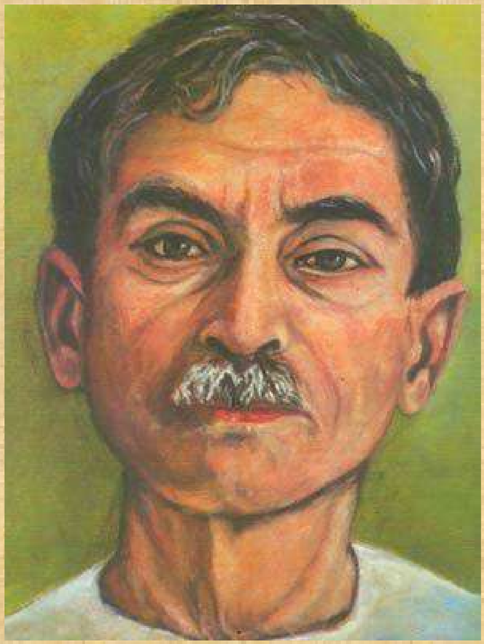

## मुंशी प्रेमचंद : यथार्थवादी साहित्य के अमर शिल्पी

"साहित्य समाज का दर्पण है"—इस कथन को यदि किसी साहित्यकार ने अपने जीवन और लेखन से चरितार्थ किया, तो वे थे मुंशी प्रेमचंद। हिंदी और उर्दू साहित्य के इतिहास में उनका स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण एवं अद्‌वितीय है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के उस यथार्थ को शब्द दिए, जिसे समाज अक्सर अनदेखा करता था। वे केवल महान कथाकार ही नहीं, बल्कि एक संवेदनशील समाज सुधारक, राष्ट्रवादी चिंतक और मानवीय मूल्यों के प्रबल समर्थक थे। उनकी लेखनी ने साहित्य को राजमहलों से निकालकर गाँवों की पगडंडियों, खेत-खलिहानों, मजदूरों की बस्तियों और सामान्य जनजीवन से जोड़ दिया। यही कारण है कि उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से सम्मानित किया जाता है।

## संघर्षों से शुरू हुई जीवन यात्रा

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के लमही नामक गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनके पिता मुंशी अजायब लाल डाक विभाग में लिपिक थे तथा माता आनंदी देवी धार्मिक एवं संस्कारी महिला थीं। बचपन से ही प्रेमचंद का जीवन अभावों और संघर्षों से घिरा रहा। जब वे मात्र आठ वर्ष के थे, तभी उनकी माता का निधन हो गया। कुछ वर्षों बाद पिता भी चल बसे। इन परिस्थितियों ने उन्हें कम आयु में ही जीवन की कठोर वास्तविकताओं से परिचित करा दिया।

आर्थिक कठिनाइयों के कारण उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ ट्यूशन पढ़ाकर अपना जीवनयापन करना पड़ा। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने शिक्षा के प्रति अपना समर्पण बनाए रखा। आगे चलकर उन्होंने अध्यापक के रूप में कार्य प्रारंभ किया और अपनी योग्यता एवं परिश्रम के बल पर विद्यालय निरीक्षक (Deputy Inspector of Schools) के पद तक पहुँचे। किंतु साहित्य और राष्ट्रसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता इतनी गहरी थी कि उन्होंने सरकारी सेवा का त्याग कर पूर्णकालिक साहित्य-साधना का मार्ग अपनाया।

## साहित्यिक जीवन की शुरुआत

प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत उर्दू भाषा से की। प्रारंभ में वे 'नवाब राय' नाम से लेखन करते थे। उनकी पहली चर्चित पुस्तक 'सोज़-ए-वतन' अंग्रेज़ी शासन की दृष्टि में राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित मानी गई, जिसके कारण उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके बाद उन्होंने 'प्रेमचंद' नाम से लेखन प्रारंभ किया, और यही नाम आगे चलकर भारतीय साहित्य का पर्याय बन गया।

उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, संपादकीय तथा बाल साहित्य सहित अनेक विधाओं में लेखन किया। लगभग 300 से अधिक कहानियाँ, डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा अनेक निबंध और लेख लिखकर उन्होंने हिंदी साहित्य को अभूतपूर्व समृद्धि प्रदान की।

## यथार्थवादी साहित्य के प्रवर्तक

मुंशी प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं का जीवंत दस्तावेज़ है। उन्होंने किसानों के शोषण, गरीबी, बेरोज़गारी, स्त्री उत्पीड़न, दहेज प्रथा, बाल विवाह, जातिगत भेदभाव, सामंतवाद, सामाजिक विषमता, भ्रष्टाचार तथा औपनिवेशिक व्यवस्था के दुष्प्रभावों को अत्यंत मार्मिकता के साथ चित्रित किया।

उनके साहित्य में किसी वर्ग विशेष का पक्ष नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता की पीड़ा और संघर्ष की अभिव्यक्ति मिलती है। वे मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देना और जनमानस में चेतना का संचार करना भी है।

## अमर उपन्यास और कहानियाँ

मुंशी प्रेमचंद की साहित्यिक कृतियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थीं।

उनका अंतिम और सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' भारतीय किसान जीवन का सबसे प्रामाणिक चित्रण माना जाता है। इसका मुख्य पात्र होरी भारतीय किसान की आशाओं, संघर्षों और विवशताओं का प्रतीक बन गया है।

'निर्मला' में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की त्रासदी को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

'गबन' मध्यवर्गीय जीवन, सामाजिक प्रतिष्ठा और नैतिक मूल्यों के संघर्ष को उजागर करता है।

'रंगभूमि' में औद्योगीकरण और पूँजीवादी व्यवस्था के कारण सामान्य व्यक्ति के संघर्ष का चित्रण है।

'सेवासदन' नारी जीवन और सामाजिक सुधार का महत्वपूर्ण उपन्यास है, जबकि 'कर्मभूमि' राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और गांधीवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है।

उनकी कहानियाँ आज भी हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। 'ईदगाह' बाल मनोविज्ञान और त्याग की अनुपम कहानी है। 'कफ़न' सामाजिक विडंबनाओं का गहन चित्र प्रस्तुत करती है। 'पूस की रात' किसान जीवन की कठोर वास्तविकताओं को सामने लाती है। 'दो बैलों की कथा' पशुओं के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं का चित्रण करती है, जबकि 'नमक का दरोगा', 'पंच परमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी' और 'शतरंज के खिलाड़ी' जैसी रचनाएँ नैतिकता, न्याय और सामाजिक मूल्यों की उत्कृष्ट व्याख्या करती हैं।

## स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रचेतना

प्रेमचंद का साहित्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से भी गहराई से जुड़ा हुआ था। वे महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों को अपने साहित्य में प्रमुखता से स्थान दिया। उनका मानना था कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक भी होनी चाहिए।

उन्होंने साहित्य को राष्ट्रनिर्माण का प्रभावी माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं ने समाज में जागरूकता, आत्मसम्मान और परिवर्तन की चेतना जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

## संपादक और विचारक

मुंशी प्रेमचंद केवल लेखक ही नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट संपादक भी थे। उन्होंने 'हंस' और 'जागरण' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। इन पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने नए लेखकों को मंच प्रदान किया तथा सामाजिक, साहित्यिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर गंभीर विमर्श को दिशा दी।

उनका प्रसिद्ध कथन था—

"साहित्य वही है, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वतंत्रता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो और जो जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश करे।"

## आज भी क्यों प्रासंगिक हैं प्रेमचंद?

समय बदल गया है, लेकिन समाज की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे सामने हैं। आर्थिक असमानता, ग्रामीण जीवन की चुनौतियाँ, सामाजिक विषमताएँ, नैतिक मूल्यों का संकट और मानवीय संवेदनाओं का क्षरण आज भी चिंता का विषय हैं। इसलिए प्रेमचंद का साहित्य केवल इतिहास नहीं, बल्कि वर्तमान का भी मार्गदर्शक है।

उनकी रचनाएँ हमें सिखाती हैं कि समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब न्याय, समानता, करुणा और मानवता को सर्वोच्च स्थान दिया जाए।

## अंतिम पड़ाव

8 अक्टूबर, 1936 को इस महान साहित्यकार का निधन हो गया। किंतु उनका साहित्य आज भी जीवित है। उनकी रचनाओं का अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और आज भी विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा साहित्यिक मंचों पर उनका गंभीर अध्ययन किया जाता है।

## उपसंहार

मुंशी प्रेमचंद का जीवन हमें यह संदेश देता है कि संघर्ष कभी भी सफलता के मार्ग में बाधा नहीं बनता, यदि व्यक्ति में सत्य के प्रति निष्ठा, समाज के प्रति संवेदनशीलता और अपने उद्देश्य के प्रति अटूट समर्पण हो। उन्होंने साहित्य को जनजीवन से जोड़ा, समाज को नई दृष्टि दी और भारतीय साहित्य को विश्व पटल पर नई पहचान दिलाई।

आज, उनके जन्मदिवस पर उन्हें स्मरण करना केवल एक साहित्यकार को श्रद्धांजलि देना नहीं, बल्कि उन मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित करने का संकल्प लेना है जिनके लिए उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनकी लेखनी सदैव आने वाली पीढ़ियों को सत्य, न्याय, समानता और मानवता के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती रहेगी।

"जब-जब भारतीय समाज की वास्तविक तस्वीर को शब्दों में देखने की आवश्यकता होगी, तब-तब मुंशी प्रेमचंद का साहित्य हमारे सामने एक जीवंत दर्पण बनकर उपस्थित रहेगा।"

# जी.डी.बिरला व्याख्यानमाला एवं राजभाषा सम्मान

**नई दिल्ली अंचल कार्यालय द्वारा यूको बैंक जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला एवं यूको राजभाषा सम्मान 2025-26 का आयोजन**

आज दिनांक 5 जनवरी 2026 को यूको बैंक, नई दिल्ली अंचल कार्यालय द्वारा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में

हिंदी और संस्कृत- अतीत, वर्तमान तथा भविष्य विषय पर यूको बैंक जी डी बिरला स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री मुरलीमनोहर पाठक कुलपति श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय रहे।

साथ ही यूको राजभाषा सम्मान के अंतर्गत हिंदी स्नातकोत्तर 2025 की परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाली दो छात्राओं को महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री राजेश कुमार तिवारी द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

# सोशल मीडिया एवं डिजिटल युग में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की भूमिका

**भूमिका**

इक्कीसवीं सदी का वर्तमान काल डिजिटल क्रांति और सोशल मीडिया का युग है, जिसने मानव सभ्यता के संवाद तंत्र को अभूतपूर्व रूप से परिवर्तित कर दिया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, क्लाउड तकनीक और विविध डिजिटल सेवाओं ने न केवल सूचना के आदान-प्रदान को तेज़ किया है, बल्कि सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया को भी नई दिशा दी है। आज मनुष्य का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक जीवन डिजिटल माध्यमों से गहराई से जुड़ चुका है।

इस व्यापक परिवर्तन के केंद्र में **भाषा** एक सशक्त और निर्णायक माध्यम के रूप में उभरी है। प्रारंभिक दौर में डिजिटल संसार को अंग्रेज़ी भाषा का प्रभुत्व प्राप्त था, जिससे यह क्षेत्र सीमित वर्ग तक ही सिमटा हुआ प्रतीत होता था। किंतु समय के साथ-साथ जैसे-जैसे तकनीक जनसामान्य तक पहुँची, वैसे-वैसे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं ने भी डिजिटल मंचों पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। आज सोशल मीडिया, वेबसाइटों, मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन सेवाओं और डिजिटल कंटेंट में भारतीय भाषाओं का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का यह उभार केवल तकनीकी सुविधा का परिणाम नहीं है, बल्कि यह **सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समावेशन और भाषाई आत्मसम्मान** का प्रतीक भी है। डिजिटल माध्यमों ने भाषा को अभिजात वर्ग की सीमा से निकालकर आम जनता की अभिव्यक्ति का साधन बना दिया है। इस प्रकार, डिजिटल युग में हिंदी और भारतीय भाषाओं की बढ़ती भूमिका केवल संचार का विस्तार नहीं, बल्कि एक **भाषाई लोकतंत्रीकरण** की प्रक्रिया है, जो भारतीय समाज को अधिक सशक्त, समावेशी और आत्मनिर्भर बना रही है।

## 1. डिजिटल युग में भाषा का बदलता स्वरूप

डिजिटल युग ने भाषा के स्वरूप और उसके प्रयोग में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। पहले भाषा का प्रयोग मुख्यतः साहित्य, पत्राचार, भाषणों अथवा औपचारिक संवाद तक सीमित था, किंतु आज डिजिटल माध्यमों ने भाषा को **त्वरित, सरल और सर्वसुलभ** बना दिया है। वर्तमान समय में भारत में **80 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता** हैं, जिनमें से एक बड़ा वर्ग दैनिक संवाद के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग करता है। अब भाषा केवल विचारों को अभिव्यक्त करने का साधन नहीं, बल्कि अनुभवों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को तुरंत साझा करने का माध्यम बन गई है।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर भाषा का स्वरूप बहुआयामी हो गया है। आज संवाद केवल लिखित शब्दों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि **वीडियो, ऑडियो संदेश, मीम्स, रील्स, शॉर्ट्स और पॉडकास्ट** के माध्यम से भी प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जाता है। एक अनुमान के अनुसार, भारत में सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या **50 करोड़ से अधिक** है, जहाँ दृश्य और श्रव्य माध्यमों के माध्यम से भाषा का प्रयोग सबसे अधिक किया जा रहा है। इन नए माध्यमों ने भाषा को अधिक जीवंत, आकर्षक और प्रभावशाली बना दिया है, जिससे आम व्यक्ति भी सहजता से अपनी बात रख सकता है।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में **संक्षिप्त, प्रभावी और भावनात्मक अभिव्यक्ति** की स्वाभाविक क्षमता होने के कारण वे डिजिटल मंचों पर अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के लगभग **60-65% लोग अंग्रेज़ी की तुलना में भारतीय भाषाओं में कंटेंट का उपभोग करना अधिक पसंद करते हैं**। कम शब्दों में गहरी बात कहना, भावों को सीधे हृदय तक पहुँचाना और स्थानीय संदर्भों का प्रयोग भारतीय भाषाओं को डिजिटल संवाद के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बनाता है।

इसके अतिरिक्त, चैट, कमेंट, स्टोरी और रिएक्शन जैसी सुविधाओं ने भाषाओं को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी सामाजिक या शैक्षिक पृष्ठभूमि से हो, अपनी मातृभाषा में संवाद कर डिजिटल दुनिया में सक्रिय भागीदारी कर सकता है। इस प्रकार, डिजिटल युग ने भाषा को अभिजात वर्ग की सीमाओं से मुक्त कर **जनसामान्य की अभिव्यक्ति का सशक्त और लोकतांत्रिक माध्यम** बना दिया है।

## 2. सोशल मीडिया: हिंदी और भारतीय भाषाओं का नया मंच

सोशल मीडिया ने हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए अभिव्यक्ति का एक नया, सशक्त और व्यापक मंच उपलब्ध कराया है। फेसबुक, एक्स (पूर्व ट्विटर), इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सऐप और कू जैसे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने भाषाई सीमाओं को तोड़ते हुए भारतीय भाषाओं को डिजिटल दुनिया में नई पहचान दिलाई है।

पहले जहाँ डिजिटल संवाद मुख्यतः अंग्रेज़ी तक सीमित माना जाता था, वहीं आज सोशल मीडिया पर भारतीय भाषाओं की सशक्त और प्रभावशाली उपस्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

हिंदी के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में विशाल मात्रा में कंटेंट उपलब्ध है। इन भाषाओं में समाचार, विचार, मनोरंजन, शिक्षा, व्यंग्य और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सामग्री निरंतर साझा की जा रही है। इससे भाषाओं का न केवल प्रचार-प्रसार हुआ है, बल्कि उनकी जीवंतता और प्रासंगिकता भी बनी हुई है।

विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाओं में बनाए गए वीडियो, रील्स और पोस्ट सोशल मीडिया के माध्यम से करोड़ों लोगों तक पहुँच रहे हैं। स्थानीय संस्कृति, परंपराएँ और समस्याएँ अब सीमित दायरे में नहीं रहीं, बल्कि वैश्विक मंच पर चर्चा का विषय बन रही हैं। इससे क्षेत्रीय समाज की पहचान को भी नई शक्ति मिली है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अब आम नागरिक भी अपनी मातृभाषा में विचार व्यक्त कर सकता है और डिजिटल मंचों के माध्यम से अपनी आवाज़ को वैश्विक स्तर तक पहुँचा सकता है। इसके लिए किसी विशेष भाषाई या तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं रह गई है। इस प्रकार, सोशल मीडिया ने हिंदी और भारतीय भाषाओं को केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि **सामाजिक भागीदारी और लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति** का सशक्त मंच बना दिया है।

### 3. हिंदी और भारतीय भाषाएँ: डिजिटल लोकतंत्र की आधारशिला

डिजिटल युग ने सूचना और संचार के स्वरूप को मूलतः लोकतांत्रिक बना दिया है। जहाँ पहले जानकारी और तकनीकी संसाधन सीमित वर्गों तक ही सुलभ थे, वहीं आज डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से समाज के हर वर्ग की भागीदारी संभव हो पाई है। इस परिवर्तन में हिंदी और भारतीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि इन्हीं भाषाओं के माध्यम से डिजिटल तकनीक आम जनता तक पहुँची है।

आज गाँवों में रहने वाले किसान, श्रमिक वर्ग, महिलाएँ, विद्यार्थी और छोटे उद्यमी भी स्मार्टफोन और इंटरनेट के माध्यम से डिजिटल सेवाओं से जुड़ रहे हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध सूचनाओं ने डिजिटल तकनीक के प्रति भय और झिझक को कम किया है। लोग अब अपनी ही भाषा में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और अपनी समस्याएँ, सुझाव तथा विचार व्यक्त कर सकते हैं।

हिंदी और भारतीय भाषाओं में सरकारी वेबसाइटों, मोबाइल ऐप्स, डिजिटल भुगतान प्रणालियों तथा ई-गवर्नेंस सेवाओं की उपलब्धता ने **डिजिटल समावेशन** को नई गति दी है। आधार, यूपीआई, ऑनलाइन बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक कल्याण से जुड़ी सेवाएँ जब मातृभाषा में उपलब्ध होती हैं, तो उनकी पहुँच और उपयोगिता दोनों बढ़ जाती हैं। इससे शासन और नागरिकों के बीच संवाद भी अधिक प्रभावी हुआ है।

“डिजिटल इंडिया” अभियान की सफलता में भारतीय भाषाओं की भूमिका निर्णायक रही है। इस अभियान का उद्देश्य तकनीक को केवल शहरी और शिक्षित वर्ग तक सीमित न रखकर जन-जन तक पहुँचाना है, और यह लक्ष्य भारतीय भाषाओं के बिना संभव नहीं था। इस प्रकार, हिंदी और भारतीय भाषाएँ डिजिटल लोकतंत्र की **आधारशिला** बनकर भारतीय समाज को अधिक समावेशी, जागरूक और सशक्त बना रही हैं।

**4. शिक्षा, ज्ञान और साहित्य का डिजिटल विस्तार**

डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा, ज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लाकर इसे भाषाई दृष्टि से अधिक **समावेशी और सुलभ** बना दिया है। पहले गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और ज्ञान-सामग्री तक पहुँच मुख्यतः शहरी और अंग्रेज़ी-भाषी वर्ग तक सीमित मानी जाती थी, किंतु डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के विस्तार ने इस स्थिति को बदल दिया है। आज हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध शैक्षणिक सामग्री ने लाखों शिक्षार्थियों के लिए सीखने के नए द्वार खोल दिए हैं।

ऑनलाइन कक्षाएँ, ई-बुक्स, ब्लॉग, वेबिनार और यूट्यूब चैनल हिंदी एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक, हर स्तर की सामग्री अब डिजिटल माध्यमों पर मातृभाषा में प्राप्त की जा सकती है। इससे उन विद्यार्थियों को विशेष लाभ मिला है, जो अंग्रेज़ी भाषा में पूर्णतः दक्ष नहीं हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं, तकनीकी विषयों, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा सामान्य ज्ञान से जुड़ी सामग्री का हिंदी और भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे शिक्षा का दायरा विस्तृत हुआ है और सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी तथा आत्मविश्वासपूर्ण बनी है। विद्यार्थी अब अपनी भाषा में जटिल विषयों को समझकर बेहतर प्रदर्शन कर पा रहे हैं।

डिजिटल मंचों ने साहित्यिक जगत को भी नई दिशा दी है। ब्लॉग, ई-पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से नए लेखकों, कवियों और विचारकों को अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर मिला है। इससे साहित्य का लोकतंत्रीकरण हुआ है और हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की रचनात्मक ऊर्जा को नया विस्तार प्राप्त हुआ है। इस प्रकार, डिजिटल युग में शिक्षा, ज्ञान और साहित्य का क्षेत्र भाषाई रूप से अधिक सशक्त और व्यापक बनकर उभरा है।

**5. सांस्कृतिक पहचान और भाषाई आत्मसम्मान**

सोशल मीडिया ने भारतीय भाषाओं को सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक सशक्त अवसर प्रदान किया है। पारंपरिक रूप से जो लोकसंस्कृति और भाषाई धरोहर मौखिक परंपराओं तक सीमित थी, वह अब डिजिटल माध्यमों के द्वारा सुरक्षित, संरक्षित और प्रसारित हो रही है। इससे न केवल संस्कृति का संरक्षण हुआ है, बल्कि नई पीढ़ी का उससे जुड़ाव भी मजबूत हुआ है।

लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, मुहावरे, क्षेत्रीय उत्सव, रीति-रिवाज़ और पारंपरिक ज्ञान अब वीडियो, ऑडियो और डिजिटल पोस्ट के माध्यम से व्यापक रूप में साझा किए जा रहे हैं। इन डिजिटल अभिलेखों ने भारतीय भाषाओं को समय की सीमाओं से परे जाकर स्थायित्व प्रदान किया है तथा सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई है।

भारतीय भाषाओं में निर्मित डिजिटल कंटेंट से भाषाई गर्व और आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जब लोग अपनी ही भाषा में विचार व्यक्त करते हुए व्यापक सराहना प्राप्त करते हैं, तो उनमें अपनी भाषाई पहचान के प्रति सम्मान की भावना जागृत होती है। इससे यह धारणा भी कमजोर हुई है कि सफलता या आधुनिकता केवल अंग्रेज़ी भाषा से ही संभव है।

विशेष रूप से युवाओं में अपनी मातृभाषा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हुई है। सोशल मीडिया पर भारतीय भाषाओं का आकर्षक और रचनात्मक प्रयोग युवाओं को अपनी भाषा अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा है। इस प्रकार, डिजिटल युग में सोशल मीडिया भारतीय भाषाओं के माध्यम से **सांस्कृतिक चेतना, भाषाई आत्मसम्मान और राष्ट्रीय पहचान** को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

**6. तकनीक और भारतीय भाषाएँ:**

नया भविष्य आज की आधुनिक तकनीक निरंतर भारतीय भाषाओं के अनुकूल होती जा रही है, जिससे डिजिटल जगत में भाषाई समावेशन को नई दिशा मिली है। प्रारंभ में अधिकांश तकनीकी प्रणालियाँ अंग्रेज़ी भाषा पर आधारित थीं, किंतु आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) तकनीकों के विकास के साथ भारतीय भाषाओं को भी व्यापक समर्थन प्राप्त हो रहा है। अनुमानतः भारत में **60% से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता अंग्रेज़ी के बजाय भारतीय भाषाओं में डिजिटल सेवाओं का उपयोग करना पसंद करते हैं**, जिसने तकनीकी कंपनियों को बहुभाषी समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित किया है।

वॉयस असिस्टेंट, अनुवाद ऐप, टेक्स्ट-टू-स्पीच, स्पीच-टू-टेक्स्ट और अन्य एआई आधारित टूल्स हिंदी तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को तेजी से समझने और प्रयोग करने में सक्षम हो रहे हैं। एक आकलन के अनुसार, भारत में होने वाली **लगभग 70% वॉयस सर्च भारतीय भाषाओं में** की जाती हैं। इससे उन लोगों को विशेष लाभ मिला है जो पढ़ने-लिखने में सीमित हैं, किंतु अपनी मातृभाषा में बोलकर डिजिटल सेवाओं का उपयोग करना चाहते हैं।

हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में सर्च, टाइपिंग और वॉयस कमांड की सुविधा ने तकनीक को अधिक सरल और उपयोगकर्ता-अनुकूल बना दिया है। आज गूगल, यूट्यूब, डिजिटल भुगतान ऐप्स और सरकारी पोर्टलों पर भारतीय भाषाओं में सेवाएँ उपलब्ध हैं। परिणामस्वरूप, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं की पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उदाहरणस्वरूप, डिजिटल भुगतान प्रणाली यूपीआई के उपयोगकर्ताओं में बड़ी संख्या उन लोगों की है जो हिंदी या अपनी क्षेत्रीय भाषा वाले इंटरफ़ेस का प्रयोग करते हैं।

इन तकनीकी प्रगतियों के परिणामस्वरूप डिजिटल दुनिया में भाषाई बाधाएँ लगातार कम हो रही हैं। भारतीय भाषाएँ अब केवल संवाद का माध्यम नहीं रहीं, बल्कि **तकनीकी विकास की सक्रिय सहभागी** बन गई हैं। यह परिवर्तन भविष्य में एक ऐसे डिजिटल समाज की कल्पना को साकार करता है, जहाँ भाषा किसी भी प्रकार की बाधा नहीं, बल्कि **समावेशन, सुलभता और सशक्तिकरण का सशक्त साधन** होगी।

## 7. चुनौतियाँ और समाधान

यद्यपि डिजिटल युग में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, फिर भी इस प्रगति के साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है, ताकि डिजिटल माध्यमों में भारतीय भाषाओं का विकास सुदृढ़ और दीर्घकालिक हो सके।

डिजिटल मंचों पर शुद्ध भाषा के स्थान पर **मिश्रित और अशुद्ध भाषा** का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। अंग्रेज़ी और भारतीय भाषाओं के अनावश्यक मिश्रण, संक्षिप्त रूपों और अप्रामाणिक शब्दों के अधिक प्रयोग से भाषा की मौलिकता और शुद्धता प्रभावित हो रही है। इससे विशेषकर नई पीढ़ी में भाषा के सही रूप को लेकर भ्रम उत्पन्न हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं की **मानकीकृत तकनीकी शब्दावली का अभाव** एक बड़ी चुनौती है। अनेक आधुनिक अवधारणाओं और तकनीकी शब्दों के लिए भारतीय भाषाओं में सर्वमान्य शब्द उपलब्ध नहीं हैं, जिससे अनुवाद और शिक्षण की प्रक्रिया जटिल हो जाती है। साथ ही, विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म पर भाषा के प्रयोग में **मानकीकरण की कमी** भी स्पष्ट दिखाई देती है।

इन समस्याओं के समाधान के लिए ठोस और संगठित प्रयास आवश्यक हैं। भाषाई अनुसंधान को प्रोत्साहन देकर तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का विकास किया जाना चाहिए। मानक तकनीकी शब्दकोशों का निर्माण और उनका व्यापक प्रचार आवश्यक है, ताकि भाषा का प्रयोग एकरूप और सुसंगत हो सके। इसके साथ ही, गुणवत्तापूर्ण और शुद्ध भाषा आधारित डिजिटल कंटेंट निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार, यदि चुनौतियों को अवसर के रूप में देखते हुए योजनाबद्ध प्रयास किए जाएँ, तो भारतीय भाषाएँ डिजिटल युग में और अधिक सशक्त, प्रभावी तथा समृद्ध बन सकती हैं।

## निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया और डिजिटल युग ने हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को नई ऊर्जा, नई पहचान और व्यापक विस्तार प्रदान किया है। आज भाषा केवल संवाद का साधन नहीं रह गई है, बल्कि वह **सशक्तिकरण, सामाजिक समावेशन और सांस्कृतिक संरक्षण** का प्रभावी माध्यम बन चुकी है।

वर्तमान में भारत विश्व के सबसे बड़े डिजिटल बाज़ारों में से एक है। अनुमानतः देश में **80 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता** हैं, जिनमें से लगभग **60-65% उपयोगकर्ता भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री का उपभोग करते हैं**। सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या भी **50 करोड़ से अधिक** है, और इनमें बहुसंख्यक उपयोगकर्ता हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में संवाद करना पसंद करते हैं। यूट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर भारत विश्व का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता आधार रखता है, जहाँ भारतीय भाषाओं में कंटेंट की खपत निरंतर बढ़ रही है।

डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में भी भारतीय भाषाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। यूपीआई जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर होने वाले करोड़ों लेन-देन में बड़ी संख्या उन उपयोगकर्ताओं की है, जो हिंदी या अपनी मातृभाषा में उपलब्ध ऐप्स और इंटरफ़ेस का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त, सरकारी ई-गवर्नेंस पोर्टल और मोबाइल ऐप्स जब भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराए गए, तो ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में उनकी पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

यदि तकनीक और भारतीय भाषाएँ इसी प्रकार परस्पर सहयोग और समन्वय के साथ आगे बढ़ती रहीं, तो वह दिन दूर नहीं जब डिजिटल दुनिया में भारतीय भाषाएँ केवल उपस्थिति ही नहीं, बल्कि **नेतृत्वकारी भूमिका** भी निभाएँगी। इससे भारत की भाषाई विविधता और सांस्कृतिक आत्मा वैश्विक मंच पर और अधिक सशक्त रूप से प्रतिष्ठित होगी। इस प्रकार, डिजिटल युग में हिंदी तथा भारतीय भाषाएँ एक **समावेशी, आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भारत** के निर्माण में निर्णायक योगदान दे रही हैं।

**दीपक कुमार**
**वरिष्ठ प्रबंधक**
**अंचल कार्यालय, नई दिल्ली**

# यूको बैंक अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता पुरस्कार

यूको बैंक द्‌वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में नई दिल्ली अंचल कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक श्री गौरव तंवर ने द्‌वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें दिनांक 12 मार्च 2026 को भोपाल प्रशिक्षण क्रेंद्र में आयोजित अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन में प्रदान कियागया। इस अवसर पर विशेष रूप से श्री नरेंद्र सिंह मेहरा उप निदेशक, राजभाषा, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय भोपाल उपस्थित रहे।

# काव्य मंच

## महादेवी वर्मा

मैं नीर भरी दुःख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा;
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक-से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!
मेरा पग-पग संगीत-भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रँग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली!
मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार, बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नवजीवन-अंकुर बन निकली!
पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में

सुख की सिहरन हो अंत खिली!
विस्तृत नभ का कोई कोना;
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

# सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2025

# सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025

केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा निर्धारित इस वर्ष की थीम "सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी" (Vigilance: Our Shared Responsibility) के अनुरूप यूको बैंक, नई दिल्ली अंचल की सभी शाखाओं एवं कार्यालयों में 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025 का आयोजन किया गया।

सप्ताह का शुभारंभ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा (Integrity Pledge) ग्रहण करने के साथ हुआ। इस अवसर पर नई दिल्ली अंचल की विभिन्न शाखाओं एवं कार्यालयों द्वारा थीम आधारित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें वॉकाथॉन, कोलाज एवं पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता, कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी (क्विज़) प्रतियोगिता, जन-जागरूकता कार्यक्रम, विद्यार्थी जागरूकता अभियान, नुक्कड़ नाटक, संगोष्ठियाँ, तथा ग्राम सभाओं के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम प्रमुख रहे। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों एवं आमजन में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता तथा भ्रष्टाचार-निवारण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था।

27 अक्टूबर, 2025 को अंचल कार्यालय में एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के विशिष्ट अधिकारियों ने सहभागिता की। अपने संबोधन में उन्होंने सार्वजनिक जीवन एवं बैंकिंग कार्यप्रणाली में नैतिक आचरण, पारदर्शिता तथा जवाबदेही के महत्व पर प्रकाश डाला।

31 अक्टूबर, 2025 को बैंक के मुख्य सतर्कता अधिकारी (Chief Vigilance Officer - CVO) श्री धीरेंद्र सेट्टीपल्ली ने अंचल कार्यालय में उपस्थित होकर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में अंचल की सभी शाखाएँ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (VC) के माध्यम से भी सम्मिलित हुईं। अपने उद्बोधन में उन्होंने बैंकिंग कार्यों में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता तथा सक्रिय सतर्कता की आवश्यकता पर बल दिया तथा धोखाधड़ी की रोकथाम के लिए निर्धारित प्रक्रियाओं एवं दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करने का आह्वान किया।

1 नवंबर, 2025 को दृष्टिबाधित कर्मचारियों के लिए एक विशेष संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर सतर्कता अधिकारी ने प्रतिभागियों को सतर्कता, नैतिक मूल्यों, पारदर्शी कार्यप्रणाली तथा उत्कृष्ट सतर्कता व्यवहारों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया।

सप्ताह के दौरान अंचल कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा बैंक की एक शाखा में घटित वास्तविक घटना पर आधारित एक नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया। इस नाटक का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि किसी कर्मचारी की समय पर दिखाई गई सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई किस प्रकार संभावित बैंक धोखाधड़ी को रोक सकती है। इस प्रस्तुति ने सजगता, निर्धारित प्रक्रियाओं के पालन तथा समय पर सूचना देने के महत्व को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया।

3 नवंबर, 2025 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) तथा बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अपने संबोधनों में उन्होंने कार्यस्थल पर सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता एवं नैतिक कार्यसंस्कृति को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया गया।

नई दिल्ली अंचल द्वारा आयोजित इन विविध गतिविधियों के माध्यम से कर्मचारियों, ग्राहकों, विद्यार्थियों एवं आम नागरिकों में सतर्कता, नैतिक मूल्यों एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता का प्रभावी प्रसार किया गया तथा "सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी" की भावना को व्यवहारिक रूप से साकार करने का सफल प्रयास किया गया।

## सतर्कता : सुशासन की आधारशिला

*"ईमानदारी केवल एक व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि एक सशक्त संगठन की सबसे बड़ी पूँजी है। जहाँ पारदर्शिता होती है, वहाँ विश्वास जन्म लेता है और जहाँ विश्वास होता है, वहीं स्थायी विकास संभव होता है।"*

प्रत्येक वर्ष केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर **सतर्कता जागरूकता सप्ताह** का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल भ्रष्टाचार के विरुद्ध संदेश देना नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक, प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक संस्था में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, जवाबदेही तथा नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता विकसित करना है। यह सप्ताह हमें स्मरण कराता है कि भ्रष्टाचार से मुक्त भारत का निर्माण केवल कानूनों से नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की ईमानदार कार्यशैली से संभव है।

आज भारत तीव्र गति से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। बैंकिंग, शासन, कराधान, सार्वजनिक सेवाएँ और व्यापार—सभी क्षेत्रों में डिजिटल तकनीकों का व्यापक उपयोग हो रहा है। ऐसे समय में सतर्कता का अर्थ केवल वित्तीय अनियमितताओं की रोकथाम तक सीमित नहीं रह गया है। अब इसमें **डेटा सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, हितों के टकराव से बचाव, पारदर्शी निर्णय प्रक्रिया, सूचना की गोपनीयता तथा नैतिक आचरण** भी समान रूप से सम्मिलित हैं।

विशेष रूप से बैंकिंग क्षेत्र में सतर्कता का महत्व और भी बढ़ जाता है। बैंक जनता की मेहनत की कमाई का संरक्षक है। प्रत्येक जमा राशि, प्रत्येक ऋण, प्रत्येक डिजिटल भुगतान और प्रत्येक ग्राहक की व्यक्तिगत जानकारी बैंक के लिए एक अमूल्य जिम्मेदारी है। इसलिए बैंकिंग व्यवस्था में सतर्कता का अर्थ केवल नियमों का पालन करना नहीं, बल्कि ग्राहकों के विश्वास की रक्षा करना भी है।

आज डिजिटल बैंकिंग ने ग्राहकों के लिए सुविधाओं के नए द्वार खोल दिए हैं। यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, क्यूआर कोड, डिजिटल ऋण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेवाओं ने बैंकिंग को सरल बनाया है। लेकिन इनके साथ साइबर अपराध, फिशिंग, फर्जी कॉल, डेटा चोरी और डिजिटल धोखाधड़ी जैसी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। ऐसे में सतर्कता केवल सतर्कता विभाग की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी और ग्राहक का साझा दायित्व है।

एक छोटी-सी लापरवाही भी बड़े नुकसान का कारण बन सकती है। किसी अज्ञात लिंक पर क्लिक करना, ओटीपी साझा करना, ग्राहक की गोपनीय जानकारी असुरक्षित माध्यम से भेजना अथवा आंतरिक नियंत्रणों की अनदेखी करना संस्था की प्रतिष्ठा और ग्राहक के विश्वास दोनों को प्रभावित कर सकता है। इसके विपरीत यदि प्रत्येक कर्मचारी अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी, निष्पक्षता और सजगता के साथ करे तो अनेक अनियमितताओं को प्रारंभिक स्तर पर ही रोका जा सकता है।

सतर्कता का वास्तविक स्वरूप **दंडात्मक नहीं, बल्कि निवारक** (Preventive Vigilance) है। यदि प्रक्रियाएँ सरल, पारदर्शी और तकनीक आधारित हों, निर्णय समयबद्ध हों, कार्यों की नियमित समीक्षा हो तथा उत्तरदायित्व स्पष्ट हों, तो भ्रष्टाचार और अनियमितताओं की संभावनाएँ स्वतः कम हो जाती हैं। यही कारण है कि आधुनिक प्रशासन में ई-ऑफिस, डिजिटल ऑडिट, ऑनलाइन निगरानी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण तथा जोखिम प्रबंधन प्रणालियों को विशेष महत्व दिया जा रहा है।

सतर्कता की संस्कृति का निर्माण केवल कार्यालयों तक सीमित नहीं होना चाहिए। परिवार, विद्यालय, समाज और कार्यस्थल—हर स्तर पर सत्यनिष्ठा और नैतिक मूल्यों को जीवन का अभिन्न अंग बनाना होगा। जब ईमानदारी हमारी कार्यसंस्कृति का हिस्सा बन जाएगी, तब पारदर्शिता स्वतः स्थापित होगी और सुशासन का मार्ग और अधिक सुदृढ़ होगा।

आज आवश्यकता केवल भ्रष्टाचार का विरोध करने की नहीं, बल्कि **ईमानदारी को व्यवहार का स्वाभाविक हिस्सा बनाने** की है। प्रत्येक कर्मचारी यदि यह संकल्प ले कि वह किसी भी परिस्थिति में नियमों का पालन करेगा, निष्पक्ष निर्णय लेगा, सार्वजनिक संसाधनों का संरक्षण करेगा तथा संगठन के हितों को सर्वोपरि रखेगा, तो यही सतर्कता जागरूकता सप्ताह की सबसे बड़ी सफलता होगी।

आइए, इस अवसर पर हम सभी सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों को अपने व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन का आधार बनाने का संकल्प लें। एक सजग कर्मचारी, एक जिम्मेदार नागरिक और एक पारदर्शी संस्था ही विकसित, समृद्ध और भ्रष्टाचार-मुक्त भारत की सशक्त आधारशिला बन सकती है।

**"सतर्कता केवल एक सप्ताह का अभियान नहीं, बल्कि जीवनभर अपनाई जाने वाली कार्यसंस्कृति है। ईमानदारी हमारा चरित्र बने, पारदर्शिता हमारी पहचान बने और उत्तरदायित्व हमारी कार्यशैली बने—यही सतर्कता जागरूकता सप्ताह का वास्तविक संदेश है।"**

# आलेख - हर घर में एक उद्यमी : नए भारत की नई पहचान

**प्रस्तावना**

उद्यमिता (Entrepreneurship) केवल व्यापार करने का नाम नहीं है, बल्कि यह एक सोच है—कुछ नया करने की, जोखिम उठाने की और समस्याओं का समाधान ढूंढने की। प्राचीन काल में भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था क्योंकि यहाँ का हर घर किसी न किसी कुटीर उद्योग या हस्तशिल्प से जुड़ा था। आज के आधुनिक युग में, 'हर घर में एक उद्यमी' का विचार उसी गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करने और भारत को एक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनाने का एक सशक्त मार्ग है।

**आत्मनिर्भरता पर स्वामी विवेकानंद का विचार :**

**उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए। आत्मनिर्भरता ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।**

**उद्यमिता की अवधारणा और वर्तमान परिदृश्य**

एक उद्यमी वह व्यक्ति होता है जो केवल नौकरी की तलाश नहीं करता, बल्कि दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। जब हम 'हर घर में एक उद्यमी' की बात करते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हर व्यक्ति को एक बड़ी फैक्ट्री लगानी है। इसका अर्थ है कि परिवार का कम से कम एक सदस्य अपनी क्षमता, कौशल और नवाचार (Innovation) के दम पर कोई छोटा या बड़ा उद्यम शुरू करे।

वर्तमान डिजिटल युग ने इस सपने को सच करना और भी आसान बना दिया है। आज इंटरनेट और सोशल मीडिया की मदद से एक गृहिणी घर बैठे हस्तशिल्प बेच सकती है, एक किसान सीधे ग्राहकों तक अपना उत्पाद पहुँचा सकता है और एक छात्र अपनी कोडिंग स्किल्स से दुनिया भर को सेवाएं दे सकता है।

## हर घर में उद्यमी होने के लाभ

1. **आर्थिक स्वावलंबन और गरीबी उन्मूलन:** जब घर-घर में छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू होंगे, तो परिवार की आय में वृद्धि होगी। यह न केवल उस परिवार को गरीबी से बाहर निकालेगा, बल्कि देश की जीडीपी (GDP) में भी बड़ा योगदान देगा।
2. **बेरोजगारी की समस्या का समाधान:** भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में सरकार के लिए हर व्यक्ति को नौकरी देना असंभव है। यदि हर घर में एक उद्यमी होगा, तो वे न केवल खुद व्यस्त रहेंगे बल्कि अपने आस-पास के लोगों को भी काम देंगे।
3. **नवाचार और रचनात्मकता का विकास:** उद्यमिता व्यक्ति की सोचने की शक्ति को बढ़ाती है। जब लोग अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए नए उत्पाद या सेवाएं बनाएंगे, तो देश में तकनीकी और वैचारिक क्रांति आएगी।
4. **महिला सशक्तिकरण:** यदि घर की महिलाएं उद्यमी बनती हैं, तो इससे समाज में उनकी स्थिति सुदृढ़ होती है। 'लिज्जत पापड़' या 'अमूल' जैसे उदाहरण हमें बताते हैं कि जमीनी स्तर पर शुरू किए गए छोटे प्रयास कितने बड़े साम्राज्य बन सकते हैं।

## सरकार की भूमिका और डिजिटल क्रांति

भारत सरकार ने 'स्टार्टअप इंडिया', 'स्टैंडअप इंडिया' और 'मुद्रा योजना' जैसी कई योजनाएं शुरू की हैं ताकि आम आदमी को आसानी से ऋण और मार्गदर्शन मिल सके। 'वोकल फॉर लोकल' का नारा इसी दिशा में एक बड़ा कदम है। इसके अलावा, डिजिटल इंडिया अभियान ने गांवों तक इंटरनेट पहुँचाया है, जिससे ई-कॉमर्स के माध्यम से एक ग्रामीण कलाकार भी वैश्विक बाजार से जुड़ गया है।

## चुनौतियाँ और समाधान

निश्चित रूप से, हर घर में उद्यमी पैदा करना आसान नहीं है। इसके मार्ग में कई बाधाएं हैं:

- **असफलता का डर:** भारतीय समाज में आज भी लोग जोखिम लेने से डरते हैं और सरकारी नौकरी को प्राथमिकता देते हैं। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार करना होगा ताकि बच्चों में बचपन से ही उद्यमिता के बीज बोए जा सकें।
- **पूंजी की कमी:** छोटे स्तर पर व्यवसाय शुरू करने के लिए धन की कमी एक बड़ी समस्या है। इसके लिए बैंकिंग प्रक्रियाओं को और सरल बनाने की आवश्यकता है।
- **कौशल विकास (Skill Development):** बिना सही कौशल के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं हो सकता। इसके लिए स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण केंद्रों का जाल बिछाना जरूरी है।

## शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता

हमें अपनी मानसिकता को 'Job Seeker' (नौकरी खोजने वाला) से बदलकर 'Job Provider' (नौकरी देने वाला) बनाना होगा। स्कूलों और कॉलेजों में केवल किताबी ज्ञान न देकर व्यावसायिक प्रशिक्षण (Vocational Training) और केस स्टडीज के माध्यम से छात्रों को प्रेरित किया जाना चाहिए। नौकरी आपको आजीविका दे सकती है, लेकिन उद्यमिता आपको और आपके देश को भाग्य दे सकती है।

## निष्कर्ष

'हर घर में एक उद्यमी' का सपना साकार होने पर भारत की अर्थव्यवस्था की तस्वीर बदल जाएगी। यह आत्मनिर्भर भारत की नींव है। जब हमारे गांव और शहर के हर घर से नवाचार की लहर उठेगी, तो भारत को पुनः 'विश्व गुरु' बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। यह केवल आर्थिक प्रगति की बात नहीं है, बल्कि यह एक व्यक्ति के आत्मविश्वास और राष्ट्र के गौरव की बात है।

इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि विश्व के अधिकांश बड़े उद्योग और बहुराष्ट्रीय संस्थान कभी सीमित संसाधनों, छोटे कमरों या साधारण गैरेजों से ही प्रारंभ हुए थे। अतः छोटे स्तर से शुरुआत करना कमजोरी नहीं, बल्कि विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति अपनी अंतर्निहित प्रतिभा, पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय संसाधनों और आधुनिक कौशल का समन्वय करे तथा निरंतर प्रयास और सीखने की प्रवृत्ति बनाए रखे।

यह पहल केवल रोजगार सृजन नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्मविश्वास, स्वावलंबन और सामाजिक सम्मान को सुदृढ़ करने की प्रक्रिया है। इतिहास साक्षी है कि हर बड़ा उद्योग कभी छोटे स्तर से ही प्रारंभ हुआ था। यदि हम अपनी प्रतिभा को पहचानकर सही दिशा में निरंतर प्रयास करें, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत का हर घर अपनी आर्थिक समृद्धि की कहानी स्वयं लिखेगा और राष्ट्र की प्रगति में सक्रिय भागीदार बनेगा।

**समस्याओं में समाधान खोजना ही उद्यमिता की असली पहचान है।**

**प्रियंका गौर**
**वरिष्ठ प्रबंधक**
**मानव संसाधन प्रबंधन विभाग**
**अंचल कार्यालय,नई दिल्ली**

# स्थापना दिवस - 2026

## डेटा नया धन, विश्वास नई मुद्रा

*"यदि 20वीं सदी में तेल सबसे मूल्यवान संसाधन था, तो 21वीं सदी में डेटा सबसे मूल्यवान संपत्ति है। किंतु जिस प्रकार मुद्रा के बिना धन का लेन-देन संभव नहीं, उसी प्रकार विश्वास के बिना डेटा का कोई मूल्य नहीं।"*

एक समय था जब किसी व्यक्ति या राष्ट्र की समृद्धि का आकलन उसके स्वर्ण भंडार, कृषि उत्पादन या औद्योगिक क्षमता से किया जाता था। इसके बाद मुद्रा आर्थिक शक्ति का प्रमुख आधार बनी। आज दुनिया एक नए युग में प्रवेश कर चुकी है—डिजिटल अर्थव्यवस्था के युग में, जहाँ सूचना और डेटा सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति बन गए हैं। यही कारण है कि आज विश्वभर में एक नई अवधारणा तेजी से प्रचलित हुई है—"Data is the New Oil" अर्थात् *डेटा नया धन है*। किंतु इस विचार का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। यदि डेटा धन है, तो उसकी वास्तविक मुद्रा विश्वास (Trust) है।

### डिजिटल बैंकिंग का नया युग

कुछ वर्ष पहले तक बैंकिंग का अर्थ था—शाखा में जाना, पासबुक अपडेट कराना, चेक जमा करना या नकद निकासी करना। आज वही कार्य कुछ सेकंड में मोबाइल फोन के माध्यम से पूरे हो जाते हैं। यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, क्यूआर कोड, डिजिटल वॉलेट, वीडियो केवाईसी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेवाओं ने बैंकिंग को पहले से कहीं अधिक सरल, तेज़ और सुलभ बना दिया है।

जब भी कोई ग्राहक डिजिटल माध्यम से लेन-देन करता है, वह केवल धन का आदान-प्रदान नहीं करता, बल्कि अपने व्यवहार, प्राथमिकताओं और वित्तीय आदतों से जुड़ा मूल्यवान डेटा भी उत्पन्न करता है। यही डेटा बैंकों को ग्राहकों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने और अधिक उपयुक्त सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

## डेटा क्यों है नया धन?

आज डेटा किसी भी वित्तीय संस्था की सबसे महत्वपूर्ण परिसंपत्तियों में से एक है। ग्राहक का लेन-देन इतिहास, बचत का व्यवहार, ऋण भुगतान की नियमितता, निवेश की प्रवृत्ति और डिजिटल भुगतान की आदतें—ये सभी मिलकर ग्राहक की एक व्यापक वित्तीय प्रोफ़ाइल तैयार करते हैं।

उदाहरण के लिए—

- यदि कोई ग्राहक नियमित रूप से समय पर अपनी ईएमआई जमा करता है, तो बैंक उसके लिए बेहतर ऋण प्रस्ताव तैयार कर सकता है।
- यदि किसी व्यापारी के खाते में डिजिटल भुगतान लगातार बढ़ रहे हैं, तो बैंक उसकी कार्यशील पूंजी (Working Capital) की आवश्यकता का बेहतर आकलन कर सकता है।
- यदि किसी क्षेत्र में यूपीआई या क्यूआर कोड के माध्यम से भुगतान तेजी से बढ़ रहे हैं, तो बैंक अपनी डिजिटल सेवाओं का विस्तार उसी क्षेत्र में अधिक प्रभावी ढंग से कर सकता है।

अर्थात् डेटा केवल सूचना नहीं, बल्कि बेहतर निर्णय, जोखिम प्रबंधन और नवाचार का आधार है।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा का प्रभाव

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) लाखों लेन-देन का कुछ ही क्षणों में विश्लेषण कर असामान्य गतिविधियों की पहचान कर सकती है। यदि किसी ग्राहक के खाते से अचानक किसी दूसरे राज्य या देश में बड़ी राशि का लेन-देन होता है, जबकि उसकी सामान्य बैंकिंग गतिविधियाँ स्थानीय स्तर तक सीमित रही हैं, तो एआई प्रणाली तुरंत उस लेन-देन को संदिग्ध मानकर अतिरिक्त सत्यापन की प्रक्रिया शुरू कर सकती है।

इसी प्रकार मशीन लर्निंग तकनीक संभावित ऋण चूक (Default) की संभावना का पूर्वानुमान लगाने, धोखाधड़ी की पहचान करने तथा ग्राहकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पाद सुझाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

**लेकिन केवल डेटा पर्याप्त नहीं**

डेटा जितना शक्तिशाली है, उतना ही संवेदनशील भी है। ग्राहक बैंक को केवल अपनी जमा पूंजी ही नहीं सौंपता, बल्कि अपनी पहचान, मोबाइल नंबर, आधार, पैन, आय का विवरण, निवेश संबंधी जानकारी और अनेक व्यक्तिगत सूचनाएँ भी सौंपता है।

यहीं से विश्वास की वास्तविक परीक्षा प्रारंभ होती है।

यदि ग्राहक को यह विश्वास न हो कि उसका डेटा सुरक्षित रहेगा, तो वह डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने में संकोच करेगा। इसलिए डिजिटल बैंकिंग की सफलता केवल तकनीक पर नहीं, बल्कि विश्वास पर आधारित है।

**विश्वास ही है नई मुद्रा**

यदि कोई व्यक्ति बैंक में करोड़ों रुपये जमा करता है, तो उसका सबसे बड़ा आधार बैंक की इमारत नहीं, बल्कि उस संस्था की विश्वसनीयता होती है। ठीक इसी प्रकार डिजिटल युग में ग्राहक अपना डेटा भी उसी संस्था को सौंपता है जिस पर उसे पूर्ण विश्वास हो।

विश्वास का निर्माण केवल बड़े दावों से नहीं होता, बल्कि छोटे-छोटे व्यवहारों से होता है—

- ग्राहक की जानकारी को गोपनीय रखना।
- साइबर सुरक्षा के उच्च मानकों का पालन करना।
- डेटा का उपयोग केवल अधिकृत उद्देश्यों के लिए करना।
- पारदर्शिता बनाए रखना।
- ग्राहकों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना।
- किसी भी सुरक्षा घटना पर त्वरित और जिम्मेदार कार्रवाई करना।

यही कारण है कि आज कहा जा रहा है—"Trust is the New Currency."

**एक छोटी-सी सीख**

कल्पना कीजिए कि दो बैंक समान ब्याज दर, समान डिजिटल सुविधाएँ और समान ऋण उत्पाद प्रदान करते हैं। अंतर केवल इतना है कि एक बैंक की साइबर सुरक्षा अत्यंत मजबूत है और ग्राहकों का उस पर वर्षों से अटूट विश्वास है, जबकि दूसरे बैंक में बार-बार डेटा लीक या साइबर धोखाधड़ी की घटनाएँ सामने आती रहती हैं।

ऐसी स्थिति में अधिकांश ग्राहक किस बैंक का चयन करेंगे?

उत्तर स्पष्ट है—विश्वास ही सबसे बड़ा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ (Competitive Advantage) बन जाता है।

**कर्मचारियों की भूमिका**

डिजिटल बैंकिंग में साइबर सुरक्षा केवल आईटी विभाग की जिम्मेदारी नहीं है। बैंक का प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी डेटा सुरक्षा का प्रहरी है।

एक छोटी-सी लापरवाही—जैसे किसी अनधिकृत व्यक्ति को ग्राहक की जानकारी देना, संदिग्ध ई-मेल खोलना, कमजोर पासवर्ड रखना या गोपनीय दस्तावेज़ साझा करना—बैंक की प्रतिष्ठा और ग्राहक के विश्वास दोनों को नुकसान पहुँचा सकती है।

इसी प्रकार ग्राहकों को समय-समय पर फिशिंग, ओटीपी साझा न करने, फर्जी लिंक से बचने तथा सुरक्षित डिजिटल लेन-देन के प्रति जागरूक करना भी हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

**भविष्य की बैंकिंग**

आने वाले वर्षों में ओपन बैंकिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचेन, डिजिटल रुपया (CBDC), बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और हाइपर-पर्सनलाइज्ड बैंकिंग जैसी तकनीकें बैंकिंग

व्यवस्था को और अधिक उन्नत बनाएँगी। इन सभी तकनीकों की आधारशिला डेटा होगी, परंतु उनकी सफलता का वास्तविक आधार ग्राहक का विश्वास ही रहेगा।

## निष्कर्ष

डेटा निस्संदेह आधुनिक अर्थव्यवस्था की सबसे मूल्यवान संपत्ति बन चुका है। किंतु किसी भी डेटा का वास्तविक मूल्य तभी है, जब उसका संग्रह, उपयोग और संरक्षण पूर्ण पारदर्शिता, नैतिकता और उत्तरदायित्व के साथ किया जाए। बैंकिंग केवल लेन-देन का व्यवसाय नहीं, बल्कि विश्वास का व्यवसाय है।

आज आवश्यकता केवल डिजिटल बनने की नहीं, बल्कि विश्वसनीय डिजिटल संस्था बनने की है। क्योंकि भविष्य उसी का होगा, जिसके पास केवल अधिक डेटा नहीं, बल्कि अधिक विश्वास होगा।

अंततः यही कहा जा सकता है—

"डेटा हमें शक्ति देता है, तकनीक हमें गति देती है, परंतु विश्वास ही वह आधार है जो बैंक और ग्राहक के संबंध को स्थायी बनाता है। वास्तव में, डिजिटल युग में डेटा नया धन है और विश्वास उसकी सबसे मूल्यवान मुद्रा।"

सौजन्य : इंटरनेट

**31 मार्च 2026 तक यूको बैंक नई दिल्ली अंचल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 46,428 करोड़ का कुल व्यवसाय (TWO, Pool एवं Colending को छोड़कर) अर्जित किया। यह उपलब्धि ग्राहकों के अटूट विश्वास, कर्मचारियों की कर्मनिष्ठा तथा उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाओं का प्रतिफल है।**

**मार्च 2026 (आंकड़े करोड़ में)**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | चालू खाता | 768 |
| 2. | कुल जमा | 42925 |
| 3. | बचत जमा | 4374 |
| 4. | कासा | 5142 |
| 5. | कुल रिटेल | 1970 |
| 6. | कुल एमएसएमई | 1090 |
| 7. | कुल अग्रिम | 3528 |
| 8. | कुल कृषि | 111 |
| 9. | कोर रिटेल | 1833 |
| 10. | कुल कारोबार | 46428 |

# यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

"हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि
हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।
हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं
उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।
हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।
हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों
एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

**राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी**
**यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।"**

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust